सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2025-26

कक्षा:-8	विषय: हिंदी पाठ्य पुस्तक	पाठ:12 दादा साहब फालके

पाठ 12. दादा साहब फालके

मौखिक कौशल

1, पिता पुत्र को नाटक देखने का शौक था।

2. पिता की चित्र और कला में गहरी रुचि थी।

3. पूरे परिवार ने 'ईसा मसीह' पर आधारित 'जीसस, द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट' चलचित्र देखा।

4. घुंडीराम गोविंद फालके।

5. 'दादा साहब फालके।

लिखित कौशल

1. (क) चित्रपट पर तरह-तरह के जानवर आ रहे थे, जा रहे थे. रुक नहीं रहे थे। यह देखकर पिता-पुत्र दोनों अचंभित थे। उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि चित्र चल भी सकते हैं।

(ख) पिता सोच रहे थे कि कोई ऐसी तकनीक आ गई है जो सिर्फ चित्र नहीं उकेरती बल्कि दृश्य पकड़ती है और उसे चित्रपट पर दिखा देती है। वास्तव में यह चित्रपट नहीं दृश्यपट है। उन्होंने सोचा कि अगर भारत में जीसस की जगह राम या कृष्ण पर फ़िल्म बनाई जाए, तो खूब लोग देखेंगे।

(ग) घुंडीराज गोविंद फालके पर चलचित्र बनाने का जुनून चढ़ गया था। उन्होंने खुद को चलचित्र के लिए ही समर्पित कर दिया। फालके जी जी-जान से जुट गए। वे तरह-तरह के औजार जुटाने लगे। एक छोटा-सा कैमरा तथा कुछ रीलें खरीदीं। उन्होंने हर शाम चार से पाँच घंटे फ़िल्म देखना शुरू कर दिया।

(घ) सन् 1913 में 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म से भारतीय सिनेमा का आगाज़ हुआ।

(ङ) सिनेमा एवं फ़िल्म के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वालों को 'दादा साहब फालके पुरस्कार दिया जाता है।

2. (क) गलत (ख) सही (ग) सही (घ) गलत (ङ) सही

मूल्यपरक प्रश्न

1. यह सत्य है कि यदि लगन और जुनून हो तो मनुष्य कुछ भी कर सकता है। बिना लगन या जुनून के मनुष्य को कामयाबी नहीं मिलती। बड़े-बड़े प्रसिद्ध व्यक्तियों ने लगन और जुनून के बल पर ही सफलता की ऊँचाइयों को छुआ है। उदाहरण के तौर पर थॉमस अल्वा एडिसन को ले सकते हैं जिन्होंने बल्ब का आविष्कार किया था। एक हज़ार बार असफल होने के बाद उन्हें बल्ब बनाने में सफलता मिली। इस सफलता के पीछे उनकी लगन और जुनून ही था।

2. यह कथन सटीक है कि फ़िल्में जीवन का आईना होती हैं। ये आमतौर पर व्यावहारिक जीवन में घटित घटनाओं पर केंद्रित होती हैं। सामाजिक जीवन में जो कुछ मटित होता है फ़िल्में उसी का आईना होती हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ फ़िल्में जैसे फ़िल्म 'शेरशाह परमवीर चक्र विजेता शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा के जीवन पर आधारित है। इसके अलावा 'एम.एस. धोनी' भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाडी महेंद्र सिंह धोनी के जीवन पर केंद्रित है।